B.A sem-1

के सम्बन्ध में नहीं है पर केवल इसके विषय में कि पूर्ववर्ती से अनुवर्ती आपादित है। किसी भी सोपाधिक प्रकथन का अर्थ पूर्ववर्ती और अनुवर्ती में जो आपादान-सम्बन्ध बतलाया गया है। उस पर निर्भर है। अतः वह जानना आवश्यक है कि आपादान-सम्बन्ध क्या है।

यदि विभिन्न सोपाधिक प्रकथनों का परीक्षण किया जाए तो स्पष्ट होता है कि उनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के आपादन व्यक्त हो। उदाहरणार्थ, चार सोपाधिक प्रकथन हो।

1. यदि वह आकार त्रिभुज है तो इनमें तीन भुजाएँ होती हैं
2. यदि राम मूर्ख है तब वह धोखा खाएगा
3. यदि सोना को सोहागा में डाला जाय तो वह चमकेगा
4. यदि जर्मनी जीतेगा तो मैं सब बाँट दूँगा।

B.A - sem - 1

Conditional Statements

* सोपाधिक प्रकथन

यदि कोई प्रकथन किसी अन्य प्रकथन पर आश्रित बतलाया जाय तो वह एक सोपाधिक conditional प्रकथन है, जैसे- यदि परीक्षा शीघ्र होगी तो वह फेल करेगा। यह एक यौगिक प्रकथन है। इसमें वह फेल करेगा प्रकथन 'परीक्षा शीघ्र होगी' प्रकथन पर निर्भर बतलाया गया है। यह एक सोपाधिक प्रकथन है। ऐसे यौगिक प्रकथन को हत्वाश्रित या आपादनात्मक प्रकथन कहा जाता है। इसमें दो निर्मायक अंग होते हैं, एक जो उपाधि को व्यक्त करता है, जैसे- 'यदि परीक्षा शीघ्र होगी' और दूसरा, जो उस उपाधि पर निर्भर बतलाया जाता है, जैसे 'वह फेल करेगा'। वह निर्मायक अंग जो उपाधि है और जो 'यदि तब' के बीच में होता है उसे पूर्ववर्ती या आपादक और वह जो उस उपाधि पर निर्भर माना गया है और जो तब के बाद आता है उसे अनुवर्ती या आपाद्य कहा जाता है। सोपाधिक प्रकथनों में यह नहीं बताया जाता है कि इसका पूर्ववर्ती सत्य है या अनुवर्ती सत्य है पर मात्र इतना ही कि यदि पूर्ववर्ती सत्य है तब इसका अनुवर्ती भी सत्य है है। ऐसे प्रकथन पूर्ववर्ती की सत्यता